तृतीयः पाठः

राष्ट्रचिन्ता गरीयसी

चन्द्रगुप्तस्य राज्ये तस्य अमात्यः चाणक्यः सर्वदा देशहिताय एव प्रयत्नं करोति। तदर्थं स सम्राजः चन्द्रगुप्तस्य आदेशस्य उल्लङ्घनम् अपि कर्तुम् उत्सहते स्म। देशस्य कृते एव प्रजाधनस्य सदुपयोगः स्यात् इति शिक्षयति एषः नाट्यांशः। एषः अंशः 'मुद्राराक्षसम्' इति संस्कृतनाटकात् सङ्कलितः।

शब्दार्थः— **चाणक्यस्य**—चाणक्य के। **राज्ये**—राज्य में। **अमात्य**—मन्त्री। **सर्वदा**—सदा। **तदर्थम्**—उसके लिए। **सम्राजः**—सम्राट के। **आदेशस्य**—आज्ञा के। **कर्तुम्**—करने के लिए। **उत्सहते स्म**—उत्साह कर लेता था। **देशस्य**—देश के। **कृते**—के लिए। **सदुपयोगः**—अच्छा उपयोग। **शिक्षयति**—सिखाता है।

सरलार्थ—चन्द्रगुप्त के राज्य में उसका मन्त्री चाणक्य सदा देश के हित के लिये ही प्रयास करता है। उसके लिए वह सम्राट चन्द्रगुप्त के आदेश का उल्लंघन करने का साहस भी कर लेता था। यह नाट्यांश यह सिखाता है कि देश के हित के लिए ही प्रजाओं के धन का अच्छा उपयोग होना चाहिए। यह अंश 'मुद्राराक्षस' नामक संस्कृत-नाटक से संकलित है।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

(स्थानम् - कुसुमपुरे चन्द्रगुप्तस्य प्रासादः)

(कञ्चुकी प्रविशति)

कञ्चुकी - (परिक्रम्य, आकाशम् उद्वीक्ष्य) भोः भोः प्रासादाधिकृताः पुरुषाः! देवः चन्द्रगुप्तः वः विज्ञापयति-कौमुदीमहोत्सव-कारणतः अतिरमणीयं कुसुमपुरम् अवलोकयितुम् इच्छामि इति। अतः सुगाङ्गप्रासादस्य उपरि स्थिताः प्रदेशाः संस्क्रियन्ताम्। (पुनः आकाशे) किं ब्रूथ? कौमुदी-महोत्सवः प्रतिषिद्धः? आः किम् एतेन वः प्राणहरेण कथाप्रसङ्गेन? यथा आदिष्टं, चन्दनवारिणा भूमिं शीघ्रं सिञ्चन्तु। पुष्पमालाभिः स्तम्भान् अलङ्कुर्वन्तु। किं ब्रूथ? आर्य! इदम् अनुष्ठीयते देवस्य शासनम् इति। भद्राः! त्वरध्वम्, त्वरध्वम्। अयमागतः एव देवः चन्द्रगुप्तः।

(नेपथ्ये) इत इतो देवः।

(ततः प्रविशति राजा प्रतिहारी च)

राजा (स्वगतम्) अहो! राज्यं हि नाम धर्मवृत्तिपरकस्य नृपस्य कृते महत् कष्टदायकम्। दुराराध्या हि राजलक्ष्मीः। (प्रकाशम्) आर्य वैहीनरे! सुगाङ्गमार्गम् आदेशय।

कञ्चुकी इत इतो देवः। (नाट्येन परिक्रम्य) अयं प्रासादः। शनैः आरोहतु देवः।

राजा (नाट्येन आरुह्य) आर्य! अथ अस्मद्वचनात् आघोषितः कुसुमपुरे कौमुदीमहोत्सवः?

कञ्चुकी अथ किम्!

राजा तत्कथं कौमुदीमहोत्सवः न प्रारब्धः?

कञ्चुकी एवम् एतत्।

राजा किम् एतत्?

कञ्चुकी देव! एतत् इदम्।

राजा स्पष्टं कथय।

कञ्चुकी अथ प्रतिषिद्धः कौमुदीमहोत्सवः।

राजा (सक्रोधम्) आः, केन?

कञ्चुकी देव! न अतः परं विज्ञापयितुं शक्यम्।

राजा न खलु आर्यचाणक्येन अपहृतः प्रेक्षकाणाम् अतिशयरमणीयः चक्षुषो विषयः?

कञ्चुकी देव! कः अन्यः जीवितुकामो देवस्य शासनम् अतिवर्तेत?

राजा (नाट्येन उपविश्य) आर्य! आचार्यचाणक्यं द्रष्टुम् इच्छामि।

कञ्चुकी यथा आज्ञापयति देवः। (इति निष्क्रान्तः)

शब्दार्थः, पर्यायवाचिशब्दाः टिप्पण्यश्च— परिक्रम्य—परिभ्रम्य (परि + क्रम् + ल्यप्), घूमकर। **अधिकृताः**—कर्मचारिणः (अधि + कृताः, प्रथमा, बहुवचनम्), कर्मचारी गण। **वः**—युष्मभ्यम् (युष्मद्, चतुर्थी, बहुवचनम्), तुम्हारा। **अवलोकयितुम्**—द्रष्टुम (अव + लोक + तुमुनम्) देखने के लिए। **संस्क्रियन्ताम्**—अलङ्क्रियन्ताम् (सम् + कृ, लोट्, प्र०, बहुवचनम्), सजाये जाएँ। **कौमुदीमहोत्सवः**—शरत्पूणिमोत्सवः (कौमुद्याः महोत्सवः), शरत्पूर्णिमा का आयोजन। **प्रतिषिद्धः**—निषिद्धः (प्रति + सिध् + क्त), रोक दिया गया। **प्राणहरेण**—प्राण-अपहारकेण (प्राणान् हरति, तेन), प्राणों को हरनेवाले। **कथा प्रसङ्गेन**—वार्तया (कथायाः प्रसङ्गेन), कथा-प्रसंग (वार्ता) से। **अनुष्ठीयते**—सम्पाद्यते (अनु + स्था (यक) लट्), (प्र० पु०, एकवचनम्), कार्य सम्पन्न किया जाता है। **त्वरध्वम्**—शीघ्रतां कुरुत (त्वर्, लोट्, म० पु०, बहुवचनम्), जल्दी करो। **दुराराध्या**—कपटैः उपास्या (दुः + आ + राध् + क्यन्), कठिनता से प्रसन्न होने वाली। **विज्ञापयितुम्**—निवेदनम्, (वि + ज्ञा + णिच् + तुमुन्), निवेदन करना। **अपेहृतः**—नाशितः दूरीकृतः (अप + हृ + क्त), छीन लिया गया है। **विज्ञापयितुम्**—निवेदनम्, (वि + ज्ञा + णिच् + तुमुन्), निवेदन करना। **अपेहृतः**—नाशितः दूरीकृतः (अप + हृ + क्त), छीन लिया गया है।

प्रसंग— प्रस्तुत नाट्यांश 'राष्ट्रचिन्ता गरीयसी' पाठ से लिया गया है। यह पाठ विशाखकृत मुद्राराक्षस नाटक के तृतीय अंक का सम्पादित एवं संक्षिप्त किया गया अंश है (सभी पद्यों को इसमें से हटा दिया गया है तथा भाषा को भी आवश्यकतानुसार सरल किया गया है।) प्रस्तुत अंश में कुसुमपुर में चन्द्रगुप्त के महल में कञ्चुकी प्रासाद के अधिकारियों से बात कर रहा है। फिर नेपथ्य

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

में प्रतिहारी राजा को 'इत इतो देवः' कहकर ओदश देता है। दोनों के प्रवेश के बाद राजा और कञ्चुकी का वार्तालाप है। कञ्चुकी अपने मुँह से नहीं बताता कि चन्द्रगुप्त के द्वारा आघोषित कौमुदी महोत्सव का आयोजन किसलिए रद्द, किया गया है पर राजा स्वयं समझ लेता है कि आचार्य चाणक्य के लोगों ने नेत्रों को आनन्द देने वाला कौमुदी मोहत्सव का प्रसंग रूकवा दिया है। अन्त में राजा चन्द्रगुप्त आचार्य चाणक्य से मिलने की इच्छा प्रगट करते हैं।

भावार्थ— प्रस्तुत सन्दर्भ में राजा चन्द्रगुप्त की आज्ञा के उल्लंघन से राजा के क्रुद्ध होने तथा परिणामस्वरूप उसके द्वारा आर्य चाणक्य को बुलवाने का प्रसंग है।

सरलार्थ— (स्थान—कुसुमपुर में चन्द्रगुप्त का महल) (कञ्चुकी प्रवेश करता है)

कञ्चुकी — (घूमकर, आकाश की ओर ऊपर देखकर) अरे, अरे, महल के कर्मचारीगण, लोगो! महाराज चन्द्रगुप्त आपको निवेदन करते हैं कि "मैं कौमुदी महोत्सव के कारण से अतीव रमणीय (सजे-धजे) कुसुमपुर को देखना चाहता हूँ। इसलिए सुगाङ्ग-महल के ऊपरी ओर स्थित भाग अच्छी तरह सजाये जाएँ।" (फिर, आकाश की ओर, सुनकर) तुमने क्या कहा? क्या कौमुदी महोत्सव को मना कर दिया गया? अरे, ऐसे तुम्हारे प्राणों का हरण करने वाले इस बात से क्या प्रयोजन? (अर्थात् ऐसी बात मत करो जिससे तुम्हारे प्राण हर लिए जाएँ)। जैसा आदेश दिया गया है, (तदनुसार) चन्दन के जल से शीघ्र भूमि का सिञ्चन करें। फूलों की मालाओं से स्तम्भों (खम्भों) को अलङ्कृत (सुशोभित) करें। कया कहते हो? महाराज की इस आज्ञा का पालन किया जा रहा है। भद्र (भले) पुरुषो! जल्दी करो, जल्दी करो। मैं महाराज चन्द्रगुप्त बस आ ही गया हूँ।

(नेपथ्य में) महाराज इधर से आयें, इधर से।

(उसके बाद राजा और प्रतिहारी (द्वारपाल) प्रवेश करते हैं।)

राजा — (मन ही मन) राजधर्म का पालन करने वाले राज्य के लिए राज्य निश्चय ही बहुत कष्ट देने वाला है। राजलक्ष्मी को प्रसन्न रखना कठिन है। (सुनाकर) आर्य वैहीनरे! सुगाङ्ग (प्रासाद) के मार्ग की ओर चलना है।

कञ्चुकी — इधर से आवें महाराज! (अभिनय के द्वारा, घूमकर) यह महल है। महाराज धीरे से चढ़ें।

राजा — (अभिनयपूर्वक चढ़कर) आर्य, तो क्या हमारी आज्ञा से कुसुमपर में कौमुदी महोत्सव की पूरी तरह घोषणा कर दी गई थी?

कञ्चुकी — जी हाँ।

राजा — तो कौमुदी महोत्सव को प्रारम्भ क्यों नहीं किया गया है?

कञ्चुकी — ऐसी ही बात है।

राजा — क्या ऐसी बात है?

कञ्चुकी — महाराज! यह ऐसा है।

राजा — साफ-साफ कहो।

कञ्चुकी — कौमुदी महोत्सव को मना कर दिया गया है।

राजा — (क्रोध के साथ) अरे! किसके द्वारा।

कञ्चुकी — महाराज, इससे आगे नहीं बताया जा सकता।

राजा — क्या निश्चय ही आर्य चाणक्य के द्वारा दर्शकों के लिए अत्यन्त आनन्ददायक दर्शनीय विषय छीन लिया गया?

कञ्चुकी — महाराज! और दूसरा कौन महाराज की आज्ञा का उल्ल्घंन कर सकता है।

राजा — (अभिनयपूर्वक बैठकर) आर्य मैं आचार्य चाणक्य से मिलना चाहता हूँ।

(ततः प्रविशति आसनस्थः स्वभवनगतः चिन्तां नाटयन् चाणक्यः)

चाणक्यः — (आकाशे लक्ष्यं बद्ध्वा) कथं स्पर्धते मया सह दुरात्मा राक्षसः? राक्षस! राक्षस! विरम विरम अस्माद् दुर्व्यसनात्।

कञ्चुकी — **(प्रविश्य) (परिक्रम्य अवलोक्य च) इदम् आर्यचाणक्यस्य गृहम्। अहो राजाधि-राजमन्त्रिणो विभूतिः। तथाहि गोमयानाम् उपलभेदकम् एतत् प्रस्तरखण्डम्, इतः शिष्यैः आनीतानां दर्भाणां स्तूपः, अत्र शुष्यमाणैः समिद्भिः अतिनमितः छदिप्रान्तः, जीर्णाः भित्तयः। अतएव निस्पृहत्यागिभिः एतादृशैः जनैः राजा तृणवद् गण्यते। (भूमौ निपत्य) जयतु आर्यः।**

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

चाणक्यः – वैहीनरे! किम् आगमन-प्रयोजनम्?

कञ्चुकी – आर्य! देवः चन्द्रगुप्तः आर्यं शिरसा प्रणम्य विज्ञापयति–यदि कार्ये बाधा न स्यात् तर्हि आर्यं द्रष्टुम् इच्छामि।

चाणक्यः – एवम्! वृषलः मां द्रष्टुम् इच्छति। वैहीनरे! किं ज्ञातः कौमुदीमहोत्सव-प्रतिषेधः?

कञ्चुकी – अथ किम्!

चाणक्यः – केन कथितम्?

कञ्चुकी – स्वयमेव देवेन अवलोकितम्।

चाणक्यः – आः ज्ञातम्! भवद्भिः एव प्रोत्साह्य कोपितः वृषलः। किम् अन्यत्?

कञ्चुकी – (भयं नाटयन्) आर्य, देवेन एव अहम् आर्यस्य चरणयोः प्रेषितः।

चाणक्यः – कुत्र वर्तते वृषलः?

कञ्चुकी – सुगाङ्गप्रासादे।

चाणक्यः – सुगाङ्गप्रासादस्य मार्गम् आदेशय।

कञ्चुकी – इतः इतः आर्य!

(उभौ परिक्रामतः)

शब्दार्थः, पर्यायवाचिशब्दाः टिप्पण्यश्च– **प्रेक्षकाणाम्**–दर्शकानाम् (प्रेक्षक, षष्ठी, बहुवचनम्), दर्शकों काः। **जीवितुकामः**–जीवितुम् इच्छन् (जीवितुं कामः यस्य), जीना चाहनेवाला। **अतिवर्तेत**–उल्लंघनं कुर्यात् (अतिवृत् वि० लि०), उल्लंघन करे। **दुर्व्यसनात**–अपहरणव्यापारात् (दुष्टं व्यवसनं इच्छा तस्मात्), मौर्यों की राजलक्ष्मी को छीनने की इच्छा। **विभूतिः**–सम्पत्तिः (विक्तिन्! भू), ऐश्वर्य। **गोमयानाम्**–उपलानाम् पुंरीबाणाम् (गोमयं, षष्ठी, बहुवचनम्), गोंबर के उपलों को. **भेदकम्**–त्रोटकम् (भेदं करोति उपपद तत्पुरुष) तोड़नेवाला, **स्तूपम्**–समूहः (पुल्लिंग, एकवचनम्), ढेर। **जीर्णाः**–पुरातनाः (जृ क्त प्र०. बहुवचनम्). टूटी-फूटी। **वृषलः**–राजसुश्रेष्ठः (राज्ञां वृषः श्रेष्ठः) राजाओं में श्रेष्ठ। **प्रोतसाह्य**–उत्तेजकवचनैः उद्दीप्य (प्र उत् सह निच, ल्यप्)। उकसा करें।

प्रसंग– प्रस्तुत नाट्यांश पाठ्यपुस्तक के 'राष्ट्रचिन्ता गरीयसी' पाठ से लिया गया है। मूलतः इसे 'विशाखदत्त' कृत मुद्राराक्षस नाटक से संकलित किया गया है। इस पाठांश में अपनी कुटिया में बैठे चाणक्य को राक्षस की कुचालों के बारे में विचारमग्न होते दिखाया गया है। बाद में कञ्चुकी चाणक्य के भवन का वर्णन करते हैं और उन्हें चन्द्रगुप्त का आदेश सुनाते हैं। अन्त में चाणक्य चन्द्रगुप्त से मिलने चल पड़ते हैं। कञ्चुकी उन्हें मार्ग दिखाता है।

भावार्थ– कञ्चुकी तथा चाणक्य के संवाद के माध्यम से चाणक्य की चर्या, गुण, स्वभांव आदि पर प्रकाश डाला गया है।

सरलार्थ– उसके बाद आसन पर बैठा (विराजमान), अपने घर (कुटी) में चिन्ता का अभिनय करता हुआ चाणक्य का प्रवेश।

चाणक्य – (आकाश में एकटक लक्ष्य बाँधकर देखता हुआ–यह दुष्ट राक्षस मेरे साथ कैसे बराबरी करता है? अरे राक्षस! अरे राक्षस! अभी भी मौर्य राजलक्ष्मी को छीनने की इन कुचालों से अपने को हटा ले (ये दुष्कर्म करने बंद कर दे)।

कञ्चुकी – (प्रवेश करके) (घूमकर और देखकर) यह आर्य चाणक्य का घर है। अहो, राजाधिराज (सम्राट) के मन्त्री की ऐसी विभूति (ऐश्वर्य)! (एक ओर तो) यह सूखे गोबर के कंडो (उपलों) को तोड़नेवाला यह पत्थर का टुकड़ा पड़ा है। इधर शिष्यों के द्वारा लाई गई कुशाओं का ढेर पड़ा है। यहाँ सुखाई जानेवाली समिधाओं (यज्ञ की लकड़ियों) से बहुत झुका हुआ छप्पर (छत का एक कोना) है। दीवारें पुरानी तथा टूटी-फूटी हैं। इसलिए इच्छारहित ऐसे त्यागी लोगों के द्वारा राजा तिनके के समान माना जाता है। (भूमि पर गिरकर) आर्य की जय हो।

चाणक्य – अरे वैहीनरे! आने का क्या हेतु हे?

कञ्चुकी – आर्य, महाराज चन्द्रगुप्त ने आपको अपना सिर झुकाकर निवेदन किया है कि यदि कार्य में रूकावट न हो तो मैं आर्य से मिलना चाहता हूँ।

चाणक्य – ऐसा (है)। वृषल मुझसे मिलना चाहता है। क्या कौमुदी महोत्सव को रोक देने का उसे पता लग गया है?

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

कञ्चुकी — जी हाँ!

चाणक्य — किसने बतलाया?

कञ्चुकी — स्वयं ही महाराज ने देख लिया।

चाणक्य — हाँ, समझ गया। आप लोगों के द्वारा ही उकसाकर वृषल को क्रोधित किया गया है। और क्या है?

कञ्चुकी — (भय का अभिनय करके) आर्य, महाराज के द्वारा ही मुझे आप (आर्य) के चरणों में भेजा गया है।

चाणक्य — कहाँ पर है वृषल?

कञ्चुकी — सुगाङ्ग महल में।

चाणक्य — सुगाङ्ग महल का मार्ग दिखाओ।

कञ्चुकी — इधर, इधर से आर्य।

(दोनों परिक्रमा करते हैं—घूमते हैं)

• • • • •

कञ्चुकी — एष सुगाङ्गप्रासादः।

चाणक्यः — (नाट्येन आरुह्य अवलोक्य च) अये सिंहासनम् अध्यास्ते वृषलः। (उपसृत्य) विजयताम् वृषलः।

राजा — (आसनाद् उत्थाय) आर्य! चन्द्रगुप्तः प्रणमति। (इति पादयोः पतति)

चाणक्यः — (पाणौ गृहीत्वा) उत्तिष्ठ, उत्तिष्ठ, वत्स! विजयताम्।

राजा — आर्यप्रसादात् अनुभूयत एव सर्वम्। तदुपविशतु आर्यः।

चाणक्यः — वृषल! किमर्थं वयम् आहूताः?

राजा — आर्यस्य दर्शनेन आत्मानम् अनुग्रहीतुम्।

चाणक्यः — अलम् अनेन विनयेन। न निष्प्रयोजनं प्रभुभिः आहूयन्ते अधिकारिणः।

राजा — आर्य! कौमुदीमहोत्सवस्य प्रतिषेधे किं फलम् आर्यः पश्यति?

चाणक्यः — (स्मितं कृत्वा) उपालब्धुं तर्हि वयम् आहूताः।

राजा — शान्तं पापं, शान्तं पापम्। नहि, नहि, विज्ञापयितुम्।

चाणक्यः — यदि एवं तर्हि शिष्येण गुरोः आज्ञा पालनीया।

राजा — एवम् एतत्। कः सन्देहः? किन्तु न कदाचित् आर्यस्य निष्प्रयोजना प्रवृत्तिः। अतः पृच्छ्यते।

चाणक्यः — न प्रयोजनम् अन्तरा चाणक्यः स्वपनेऽपि चेष्टते।

राजा — अतएव श्रोतुम् इच्छामि।

शब्दार्थः, **पर्यायवाचिशब्दाः टिप्पण्यश्च— अध्यास्ते**—अधि + आस्, लट्, प्रथम पुरुषः, एकवचनम्, उपविशति, बैठा है। **प्रभुभिः**—प्रभु, तृतीया विभक्ति, बहुवचनम्, स्वामिभिः, स्वामियों के द्वारा। **विज्ञापयितुम**—वि, √ज्ञा, णिच्, तुमुन्; निवेदयितुम्, सूचित करने के लिए, कहने के लिए। **पृच्छ्यते**—प्रच्छ्, कर्मवाच्य, लट् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचनम्। **प्रवृत्ति**—प्र √वृत् + क्तिन्, प्रवृत्तिः, चेष्टा। **अन्तरा**—अन्तरा योगे द्वितीया, विना, बिना। **प्रयोगः**—न प्रयोजनम् अन्तरा चाणक्यः स्वप्नेऽपि चेष्टते। यहाँ प्रयोजनम् में द्वितीया विभक्ति है। **स्वप्नेऽपि**—स्वप्ने + अपि। **चेष्टते**—चेष्ट्, लट् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचनम् प्रवर्तते, कार्यं करोति, काम करता है, चेष्टा करता है।

प्रसंग— प्रस्तुत गद्यांश 'राष्ट्रचिन्ता गरीयसी' पाठ से लिया गया है। मूलतः यह 'विशाखादत्त' कृत ऐतिहासिक नाटक 'मुद्राराक्षस' से लिया गया है। इस नाट्यांश में चाणक्य से नम्रतापूर्वक चन्द्रगुप्त पूछते हैं कि आपने किस फल को सम्मुख रख कर कौमुदी महोत्सव को रुकवाया है। चाणक्य चन्द्रगुप्त के विनये को देखकर उसे यह समझाते हैं कि बिना प्रयोजन के चाणक्य कभी कोई काम नहीं करता।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

सरलार्थ—

कञ्चुकी — यह सुगाङ्ग महल है।

चाणक्य — (अभिनयपूर्वक चढ़कर और देखकर) अरे, सिंहासन पर वृषल विराजमान हैं। (पास जाकर) वृषल की विजय हो।

राजा — (आसन से उठकर) आर्य! चन्द्रगुप्त प्रणाम करता है। (यह कहकर चरणों में झुकता है)

चाणक्य — (दोनों हाथ पकड़कर) उठो, उठो वत्स! तुम्हारी जय हो।

राजा — आर्य आपकी कृपा के कारण से ही यह सब अनुभव किया जा रहा है। आर्य, बैठ जाइए।

चाणक्य — हे वृषल! किसलिए हमें बुलाया गया है?

राजा — आपके दर्शन से स्वयं को अनुगृहीत (कृपापात्र) करने के लिए।

चाणक्य — यह विनय समाप्त करो। स्वामियों के द्वारा अधिकारी बिना प्रयोजन के नहीं बुलाए जाते।

राजा — हे आर्य! कौमुदी महोत्सव को रद्द करने में आर्य (आप) क्या लाभ देखते हैं?

चाणक्य — (मुस्कुराकर) तो उलाहना देने के लिए हमें बुलाया है।

राजा — पाप-भावना शान्त हो, पाप का शमन हो। (उलाहना देने के लिए) कदापि नहीं (अपितु) निवेदन (प्रार्थना) करने के लिए।

चाणक्य — यदि ऐसा है तो शिष्य को गुरू की आज्ञा का पालन करना चाहिए।

राजा — ऐसा ही है। क्या सन्देह है? किन्तु, आर्य की कोई प्रवृत्ति कभी प्रयोजन के बिना नहीं होती। इसलिए पूछा जा रहा है।

चाणक्य — प्रयोजन के बिना तो चाणक्य स्वप्न में भी कोई चेष्टा नहीं करता।

राजा — इसीलिए मैं सुनना चाहता हूँ।

• • • • •

(नेपथ्ये वैतालिकौ काव्यपाठं कुरुतः)

राजा — **आर्य वैहीनरे! आभ्यां वैतालिकाभ्यां सुवर्णशतसहस्रं दापय।**

चाणक्यः — **(सक्रोधम्) वैहीनरे! तिष्ठ तिष्ठ। न गन्तव्यम्। वृषल! किम् अस्थाने महान् प्रजा-धनापव्ययः?**

राजा — **(सक्रोधम्) आर्येण एव सर्वत्र निरुद्धचेष्टस्य मे बन्धनम् इव राज्यं, न राज्यम् इव।**

चाणक्यः — **वृषलः। स्वयम् अनभियुक्तानां राज्ञाम् एते दोषाः सम्भवन्ति।**

राजा — **यद्येवं तर्हि कौमुदीमहोत्सव-प्रतिषेधस्य तावत् प्रयोजनं श्रोतुमिच्छामि।**

चाणक्यः — **कौमुदीमहोत्सवस्य आयोजनस्य प्रयोजनं ज्ञातुमिच्छमि।**

राजा — **प्रथमं मम आज्ञायाः पालनम्।**

चाणक्यः — **प्रथमं ममापि तव आज्ञायाः उल्लंघनम् एव। अथ अपरम् अपि प्रयोजनं श्रोतुमिच्छसि तदपि कथयामि।**

राजा — **कथ्यताम्।**

चाणक्यः — **वत्स! श्रूयताम् अवधार्यताम् च। पितृवधात् क्रुद्धः राक्षसोपदेशप्रवणः महीयसा म्लेच्छबलेन परिवृतः पर्वतक-पुत्रः मलयकेतुः अस्मान् अभियोक्तुम् उद्यतः। सोऽयं व्यायामकालो, न उत्सवकालः इति। अतः इदानीं दुर्गसंस्कारः प्रारब्धव्यः। अस्मिन् समये किं कौमुदी-महोत्सवेन इति प्रतिषिद्धः। राष्ट्रचिन्ता ननु गरीयसी। प्रथमं राष्ट्रसंरक्षणम् ततः उत्सवाः इति।**

(पटाक्षेपः)

शब्दार्थः, पर्यायवाचिशब्दाः टिप्पण्यश्च— अस्थसे—न स्थाने, अनुचिते अवसरे, अनुचित स्थान पर। **निरुद्धचेष्टस्य**—निरुद्धा चेष्टा यस्य तस्य, अवरूद्धा गतिः यस्य, तस्य, रूकी हुई गतिवाले की। **अनभियुक्तानाम्**—न अभियुक्तानाम्, स्वतन्त्रतायाः अवलम्बनं न कुर्वतां, स्वयं स्वतन्त्रता के अवलम्बन न करने वाले। **अवधार्यताम्**—अब √धृ + णिच्, कर्मवाच्य, लोट्, प्र० पु०, ए० व०, ध्यानेन श्रूयताम्, ध्यान से सुनिये। **राक्षसोपदेशप्रवणः**—राक्षस्य उपदेशे उपदेश श्रवणे प्रवणः तत्परः, राक्षस की राजनीति को मानने के लिए तैयार। **अभियोक्तुम्**—अभि √युज् + तुमुन्, आक्रमितुम, आक्रमण करने के लिए। **व्यायामकालः**—व्यायामस्य

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

विशिष्टस्य आयामस्य आयासस्य कालः अवसरः, विशेष प्रयत्नों का समय। **दुर्गसंस्कार**—दुर्गस्य संस्कारः षष्ठी, तत्पुरुषः, सेना-संग्रह रूपस्य अवसरेः। सेनासंग्रह आदि द्वारा किले की नाकाबन्दी (परिष्करण-संस्कार) आदि का अवसर।

भावार्थ— प्रस्तुत नाट्यांश में चाणक्य कहते हैं कि राष्ट्रचिन्ता, उत्सव से अधिक महत्व की होती है। पहले राष्ट्र के संरक्षण का कार्य होता है और उसके बाद उत्सव।

प्रसंग— प्रस्तुत नाट्यांश 'राष्ट्रचिन्ता गरीयसी' से उद्धृत है। मूलतः यह 'विशाखदत्त' कृत 'मुद्राराक्षस' से सम्पदित किया गया है। प्रस्तुत नाट्यांश में चाणक्य वैतालिकों को दी जानेवाली एक लाख सुवर्ण मुद्राओं के अपव्यय को रूकवाते हैं तथा बाद में मलयकेतु के आक्रमण की सूचना के आधार पर दुर्गसंस्कार हेतु परामर्श देते हैं। कौमुदी महोत्सव को रूकवाने का कारण भी मलयकेतु के आक्रमण की सूचना थी।

सरलार्थ—(नेपथ्य में दो वैतालिक काव्यपाठ करते हैं।)

राजा — आर्य वैहीनरे! इनं वैतालिकों को एक लाख सुवर्णमुद्राएँ दिला दो।

चाणक्य — (क्रोध के साथ) वैहीनरे, रूको रूको। मत जाओ। हे वृषल (राजश्रेष्ठ)! बिना प्रयोजन प्रजा के धन की महान् फिजूलखर्ची (अपव्यय) किसलिए है?

राजा — (क्रोध के साथ) आर्य के द्वारा ही सब जगह मेरी चेष्टाओं को रोकने के कारण मेरा राज्य बन्धन के समान है, राज्य के समान नहीं है।

चाणक्य — वृषल (राजश्रेष्ठ)! स्वयं स्वतन्त्रता का सहारा न लेने वाले राजाओं के लिए ये दोष (बन्धनादि) सम्भव हैं।

राजा — यदि ऐसा है तो मैं कौमुदी महोत्सव को रद्द करने का प्रयोजन सुनाना चाहता हूँ।

चाणक्य — मैं कौमुदी महोत्सव के आयोजन का प्रयोजन जानना चाहता हूँ।

राजा — पहले मेरी आज्ञा का पालना होना चाहिए।

चाणक्य — मेरा प्रथम प्रयोजन तो यह भी है कि तुम्हारी आज्ञा का उल्लंघन ही करना है। और अगर दूसरा प्रयोजन सुनना चाहते हो तो उसे भी मैं कहता हूँ।

राजा — कहिए!

चाणक्य — वत्स (प्रिय शिष्य)! सुनिए और समझ लीजिए। पिता की हत्या से क्रोधित हुआ, (तथा) (महामन्त्री) राक्षस के उपदेश में तल्लीन, महान् म्लेच्छ सेना से घिरा हुआ पर्वतक का पुत्र मलयकेतु हम पर आक्रमण करने के लिए तैयार है। अतः यह उद्योग करने का अवसर है, उत्सव मनाने का अवसर नहीं है। इसलिए अब सेना के संग्रह आदि के द्वारा किले की नाकाबन्दी आदि को प्रारम्भ कर देना चाहिए। इस समय कौमुदी महोत्सव से क्या लाभ? यही विचार कर उसे मना किया गया है। राष्ट्र की चिन्ता अधिक महत्वपूर्ण है। पहले राष्ट्र का संरक्षण और उसके बाद उत्सव। (पर्दा गिरता है।)

अनुप्रयुक्त-व्याकरणम्

पाठाधारिताः सन्धिविच्छेदाः

प्रासादाधिकृताः	=	प्रासाद + अधिकृताः	**संस्क्रियताम्**	=	सम् + क्रियताम्
महोत्सवः	=	महा + उत्सवः	**प्रतिषिद्धः**	=	प्रति + सिध् + तः
अनुष्ठीयते	=	अनु + स्थीयते	**अयमागत एव**	=	अयम् + आगतः + एव
इत इतो देवः	=	इतः + इतः + देवः	**दुराराध्या**	=	दुः + आराध्या
प्रारब्धः	=	प्र + आ + रभ् + तः	**चक्षुषोविषयः**	=	चक्षुषः + विषयः
जीवितुकामो देवस्य	=	जीवितुकामः + देवस्य	**निष्क्रान्तः**	=	निस् + क्रान्तः
मन्त्रिणो विभूतिः	=	मन्त्रिणः + विभूतिः	**दुरात्मा**	=	दुः + आत्मा
अध्यास्ते	=	अधि + आस्ते	**आसनाद् उत्थाय**	=	आसनात् + उत्थाय

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

उत्थाय	=	उद् + स्थाय
तदुपविशतु	=	तत् + उपविशतु
उपालब्धुम्	=	उप + आलभ् + तुम
अत एव	=	अतः + एव
यद्येवं तर्हि	=	यदि + एवम् + तर्हि
ज्ञातुमिच्छामि	=	ज्ञातुम् + इच्छामि
उल्लंघनम्	=	उत् + लंघनम्
राक्षसोपदेशप्रवणः	=	राक्षस + उपदेशप्रवणः
व्यायामकालो न	=	व्यायामकालः + न
अनुभूयत एव	=	अनुभूयते + एव
निष्प्रयोग्जनम्	=	निः + प्रयोजनम्
स्वप्नेऽपि	=	स्वपने + अपि
धनापव्ययः	=	धन + अपव्ययः
श्रोतुमिच्छामि	=	श्रोतुम् + इच्छामि
ममापि	=	मम + अपि
तदपि	=	तत् + अपि
सोऽयम्	=	सः + अयम्
प्रारब्धव्यः	=	प्र + आरभ् + तव्यः

पाठाधारिताः समासविग्रहाः

समस्तपदानि	**विग्रहाः**	**समास-नाम**
राष्ट्रचिन्ता	राष्ट्रस्य चिन्ता	षष्ठी तत्पुरुषः
प्रासादाधिकृताः	प्रासादे अधिकृताः तत्सम्बुद्धौ	सप्तमी तत्पुरुषः
कौमुदी-महोत्सवः	महान् च असौ उत्सवः महोत्सवः	कर्मधारयः
	कौमुद्याम् महोत्सवः	सप्तमी तत्पुरुषः
प्राणहरेण	प्राणान् हरति इति प्राणहरः, तेन	षष्ठी तत्पुरुषः
कथाप्रसंगेन	कथायाः प्रसंगः, तेन	षष्ठी तत्पुरुषः
धर्मवृत्तिपरकस्य	धर्मे वृत्तिः धर्मवृत्तिः	सप्तमी तत्पुरुषः
	धर्मवृत्तौ परकः, तस्य	स्तमी तत्पुरुषः
कष्टदायकम्	कष्टस्य दायकम्	षष्ठी तत्पुरुषः
चन्दनवारिणा	चन्दनस्य वारि, तेन	षष्ठी तत्पुरुषः
पुष्प-मालाभिः	पुष्पाणाम् मालाः ताभिः	षष्ठी तत्पुरुषः
राजलक्ष्मीः	राज्ञः लक्ष्मीः	षष्ठी तत्पुरुषः
सुगांगमार्गम्	सुगांगस्य मार्गः तम्	षष्ठी तत्पुरुषः
अस्मद्वचनात्	मम वचनम्, तस्मात्	षष्ठी तत्पुरुषः
सक्रोधम्	क्रोधेन सहितं यथा स्यात् तत् तथा	बहुव्रीहिः
आर्य-चाणक्येन	आर्यः च असौ चाणक्यः, तेन	कर्मधारयः
जीवितुकामः	जीवितुम कामः यस्य सः	बहुव्रीहिः
आसनस्थः	आसने तिष्ठति इति	उपपद तत्पुरुषः
स्वभवनगतः	स्वम् भवनम् स्वभवनम्	कर्मधारयः
	स्वभवनं गतः	द्वितीया-ततपुरुषः
दुरात्मा	दुष्टः आत्मा यस्य सः	बहुव्रीहिः
राजाधिराजमन्त्रिणः	राज्ञाम् अधिराजः, तस्य मन्त्रिणः	षष्ठी तत्पुरुषः
उपलभेदकम्	उपलानां भेदकम्	षष्ठी तत्पुरुषः
प्रस्तरखण्डम्	प्रस्तरस्य खंडम्	षष्ठी तत्पुरुषः
छदिप्रान्तः	छदेः प्रान्तः	षष्ठी तत्पुरुषः
निःस्पृहत्यागिभिः	निर्गता स्पृहा येभ्यः ते निस्पृहाः	बहुव्रीहिः
	निःस्पृहाः च त्यागिनः चः, तैः	कर्मधारयः

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

आगमनप्रयोजनम्	आगमनस्य प्रयोजनम्	षष्ठी तत्पुरुषः
कौमुदीमहोत्सवप्रतिषेधः	महान उत्सवः महोत्सवः	कर्मधारयः
	कौमुद्याम् महोत्सवः,	सप्तमी तत्पुरुषः
	तस्य प्रतिषेधः	षष्ठी तत्पुरुषः
आर्यप्रसादात्	आर्यस्य प्रसादः, तस्मात्	षष्ठी तत्पुरुषः
निष्प्रयोजनम्	निर्गतम् प्रयोजनम् यस्मिन् कर्मणि तत् यथा स्यात् तत् तथा	बहुव्रीहिः
सुवर्णशतसहस्रम्	शतानाम् सहस्रम् शतसहस्रम्	षष्ठी तत्पुरुषः
	सुवर्णस्य शतसहस्रम्	षष्ठी तत्पुरुषः
प्रजाधनापव्ययः	प्रजायाः धनस्य अपव्ययः	षष्ठी तत्पुरुषः
निरुद्धचेष्टस्य	निरुद्धा चेष्टा यस्य तस्य	बहुव्रीहिः
पितृवधात्	पितुः वधः पितृवधः, तस्मात्	षष्ठी तत्पुरुषः
राक्षसोपदेशप्रवणः	राक्षस्य उपदेशः राक्षसोपदेशः	षष्ठी तत्पुरुषः
	राक्षसोपदेशे प्रवणः	सप्तमी तत्पुरुषः
म्लेच्छबलेन	म्लेच्छानाम् बलम्, तेन	षष्ठी तत्पुरुषः
पर्वतकपुत्रः	पर्वतकस्य पुत्रः	षष्ठी तत्पुरुषः
व्यायामकालः	व्यायामस्य कालः	षष्ठी तत्पुरुषः
उत्सवकालः	उत्सवस्य कालः	षष्ठी तत्पुरुषः
दुर्गसंस्कार	दुर्गस्य संस्कारः	षष्ठी तत्पुरुषः
राष्ट्रसंरक्षणम्	राष्ट्रस्य संरक्षणम्	षष्ठी तत्पुरुषः

अनुप्रयोगस्य प्रश्नोत्तराणि

प्रश्न 1. उच्चैः पठित्वा अभिनयं कुर्वन्तु-

परिक्रमय, आकाशम् उद्वीक्ष्य, आरुह्य, उपविश्य, प्रणम्य, प्रविश्य, आसनाद् उत्थाय।

उत्तरम्—

परिक्रम्य — मञ्च पर चारों ओर घूमकर परिक्रमा का अभिन्य कीजिए।

आकाशम् उद्वीक्ष्य — आकाश की ओर ऊपर देखने का अभिनय कीजिए, मानो ऊपर से कोई आवाज सुनने का प्रयत्न कर रहे हों।

आरुहृय — मञ्ज पर ऊपर चढ़ने का अभिनय करें।

उपविश्य — बैठने का अभिनय करें।

प्रणम्य — चरणों में प्रणाम, निवेदन करने (झुकने) का अभिनय करें।

प्रविश्य — प्रवेश करने (रंगमञ्च पर आने) का अभिनय करें।

आसनाद् उत्थाय — आसन से उठने का अभिनय करें।

प्रश्न 2. मञ्जूषायां केचन भावाः लिखिताः। अधोलिखिताभिः पङ्क्तिभिः सह उचितं भावं मेलयत, अभिनयपूर्वकं च पठत—

मञ्जूषा

आश्चर्यम्, आशीर्वादः, आदेशः, क्रोधः, चिन्ता, प्रार्थना, उपदेशः, जिज्ञासा, परामर्शः, उत्सुकता

		पङ्क्तयः	**भावाः**
यथा	*(i)*	भद्राः। त्वरध्वम्, त्वरध्वम्	आदेशः
	(ii)	इतः इतः देव!	....

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

(iii) कथमधुना अपि कौमुदीमहोत्सवः न प्रारब्धः? ....

(iv) आर्य! आर्यचाणक्यं द्रष्टुमिच्छामि। ....

(v) अहो राजाधिराजमन्त्रिणः विभूतिः! ....

(vi) उत्तिष्ठ, उत्तिष्ठ वत्स! विजयताम्। ....

(vii) दुर्गसंस्कारः प्रारब्धव्यः। ....

उत्तरम्—

(i)	भद्राः। त्वरध्वम्, त्वरध्वम्	आदेशः
(ii)	इतः इतः देव!	आदेशः
(iii)	कथमधुना अपि कौमुदीमहोत्सवः न प्रारब्धः?	क्रोध, जिज्ञासा, चिन्ता
(iv)	आर्य! आर्यचाणक्यं द्रष्टुमिच्छामि।	उत्सुकता, प्रार्थना
(v)	अहो राजाधिराजमन्त्रिणः विभूतिः!	आश्चर्यम्
(vi)	उत्तिष्ठ, उत्तिष्ठ वत्स! विजयताम्।	आशीर्वादः
(vii)	दुर्गसंस्कारः प्रारब्धव्यः।	परामर्शः

प्रश्न 3. अधोलिखितप्रातिपदिकानां प्रथमाविभक्तौ एकवचने सम्बोधने च एकवचने रूपं लिखत—

	प्रातिपदिकम्	प्रथमा-एकवचने	सम्बोधन-एकवचने
(i)	आर्य	....	....
(ii)	भद्र	....	....
(iii)	देव	....	....
(iv)	वत्स	....	....
(v)	वृषल	....	....
(vi)	वैहीनरि	....	....

उत्तरम्—

	प्रातिपदिकम्	प्रथमा-एकवचने	सम्बोधन-एकवचने
(i)	आर्य	आर्यः	आर्य
(ii)	भद्र	भद्रः	भद्र
(iii)	देव	देवः	देव
(iv)	वत्स	वत्सः	वत्स
(v)	वृषल	वृषलः	वृषल
(vi)	वैहीनरि	वैहीनरिः	वैहीनरे

प्रश्न 4. अधोलिखितेषु पदेषु प्रकृतिप्रत्ययवियोजनं संयोजनं वा कुरुत—

(क) श्रोतुम् = ... + तुमुन्

(ख) अभि + युज् + णिच् + तुमुन् = ...

(ग) अव + लोक + तुमुन् = ...

(घ) द्रष्टुम = ...

(ङ) वि + ज्ञा + णिच् + तुमुन् = ...

(च) अनु + ... + तुमुन् = अनुग्रहीतुम्

(छ) उप + आ + ... + तुमुन् = उपालब्धुम्

उत्तरम्—

(क) श्रोतुम् = श्रु + तुमुन्

(ख) अभि + युज् + णिच् + तुमुन् = **अभियोजयितुम्**

(ग) अव + लोक + तुमुन् = **अवलोकयितुम्**

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

(घ) प्रष्टुम् = प्रच्छ् + तुमुन्

(ङ) वि + ज्ञा + णिच् + तुमुन् = विज्ञापयितुम्

(च) अनु + ग्रह + तुमुन् = अनुग्रहीतुम्

(छ) उप + आ + लभ् + तुमुन् = उपालब्धुम्

प्रश्न 5. अधोलिखितेषु वाक्येषु क्तान्तविशेषणानि योजयत—

(क) समिद्भिः..छदिप्रान्तः।

(ख) ....भित्तयः।

(ग) भवद्भिः एव प्रोत्साह्य..................................वृषलः।

(घ) वृषल! स्वयम्.............................राज्ञाम् एते दोषाः सम्भवन्ति।

(ङ) सुगाङ्गप्रासादस्य उपरि..........................प्रदेशाः संस्क्रियन्ताम्।

(च) अयम्...................................एव देवः चन्द्रगुप्तः।

(छ) ततः प्रविशति आसनस्थः...................चिन्तां नाटयन् चाणक्यः।

(ज) म्लेच्छबलेन.................पर्वतकपुत्रः मलयकेतुः अस्मान् अभियोक्तुम् उद्यतः।

उत्तरम्— (क) समिद्भिः **अतिनमितः** छदिप्रान्तः।

(ख) **जीर्णाः** भित्तयः।

(ग) भवद्भिः एव प्रोत्साह्य **कोपितः** वृषलः।

(घ) वृषल! स्वयम् **अनभियुक्तानाम्** राज्ञाम् एते दोषाः सम्भवन्ति।

(ङ) सुगाङ्गप्रासादस्य उपरि **स्थिताः** प्रदेशाः संस्क्रियन्ताम्।

(च) अयम् **आगतः** एव देवः चन्द्रगुप्तः।

(छ) ततः प्रविशति आसनस्थः **स्वभवनगतः** चिन्तां नाटयन् चाणक्यः।

(ज) म्लेच्छबलेन **परिवृतः** पर्वतकपुत्रः मलयकेतुः अस्मान् अभियोक्तुम् उद्यतः।

प्रश्न 6. अधोलिखितकथनानां वाच्यपरिवर्तनं पाठात् चित्वा लिखत—

(क) प्रभवः निष्प्रयोजनम् अधिकारिणः न आह्वयन्ति।

(ख) (भवान्) अस्मान् उपलब्धुम् आहूतवान्।

(ग) शिष्यः गुरोः आज्ञां पालयेत्।

(घ) अतः पृच्छामि।

(ङ) अतएव श्रोतुम् इष्यते।

(च) निस्पृहत्यागिनः राजानं तृणम् इव मन्यन्ते।

(छ) स्वयमेव देवः अवलोकितवान्।

(ज) भवन्तः एव प्रोत्साह्य वृषलं कोपितवन्तः।

(झ) सुगाङ्गप्रासादस्य उपरि स्थितान् प्रदेशान् संस्कुर्वन्तु।

(ञ) पुष्पमालाभिः स्तम्भाः अलङ्क्रियन्ताम्।

उत्तरम्— (क) प्रभुभिः निष्प्रयोजनम् अधिकारिभिः आयोजनं न आहूयन्ते।

(ख) (भवद्भिः) वयम् उपालब्धुम् आहूताः।

(ग) शिष्येण गुरोः आज्ञा पालनीया।

(घ) अतः पृच्छ्यते।

(ङ) अतएव श्रोतुमिच्छामि।

(च) निस्पृहत्यागिभिः राज तृणः इव मन्यते।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

(छ) स्वयमेव देवेन अवलोकितम्।

(ज) भवद्भिः एव प्रोत्साहृय वृषलः कोपितः।

(झ) सुगाङ्गप्रासादस्य उपरि स्थिताः भूमयः संस्क्रियन्ताम्।

(ञ) पुष्पमालाभिः स्तम्भान् अलङ्कुर्वन्तु।

प्रश्न 7. पाठात् तां पंक्तिं चित्वा लिखत यया ज्ञायते—

(क) चाणक्यः आचार्यः आसीत्।

(ख) चाणक्यः स्वाभिमानी आसीत्। सः कस्मादपि न बिभेति स्म।

(ग) चन्द्रगुप्तः धर्मवृत्तिपरकः आसीत्।

(घ) राक्षसः नाम नन्दस्य मन्त्री चाणक्येन सह स्पर्धां कर्तुम् इच्छति स्म।

(ङ) चाणकयस्य गृहं जीर्णकुटीरम् इव आसीत्।

(च) कञ्चुकी चाणक्यात् बिभोति स्म।

(छ) चाणक्यः प्रजायाः धनस्य अपव्ययं सोढुं न समर्थः।

(ज) चन्द्रगुप्तः चाणक्यस्य राज्यकार्येषु हस्तक्षेपेण राज्यं बन्धनम् इव मन्यते स्म।

उत्तरम्— (क) आर्य! आचार्यचाणक्यं द्रष्टुम् इच्छामि।

(ख) उपालब्धुं तर्हि वयम् आहूताः। प्रथम ममापि तव आज्ञायाः उल्लंघनम् एव।

(ग) आर्य वैहीनरे! आभ्यां वैतालिकाम्या सुवर्णशतसहस्रं दापय। अहो, राज्यं हि नाम धर्मवृत्तिपर कस्य नृपस्य कृते महत् कष्टदायकम्।

(घ) कथं स्पर्धते मया सह दुरात्मा राक्षसः?

(ङ) अत्र शुष्यमाणैः समिद्भिः अतिनमितः छदिप्रान्तः जीर्णाः भित्तयः।

(च) आर्य, दैवेन एव अहम् आर्यस्य चरणयोः प्रेषितः।

(छ) किम् अस्थाने महान् प्रजाधनापव्ययः?

(ज) आर्येण एव सर्वत्र निरुद्धचेष्टस्य मे बन्धम् इव राज्यम्, न राज्यम् इव।

प्रश्न 8. अधोलिखिताः पङ्क्तीः कः कं प्रति कथयति?

	पङ्क्तिः	कः	कम्
(क)	किम् अस्थाने महान् प्रजाधनापव्ययः।	....	....
(ख)	शान्तं पापं शान्तं पापम्।	....	....
(ग)	नहि नहि विज्ञापयितुम्।	....	....
(घ)	चन्दनवारिणा भूमिं सिञ्चन्तु।	....	....
(ङ)	आर्य! इदम् अनुष्ठीयते देवस्य अनुशासनम्।	....	....
(च)	इत इतो देवः।	....	....

उत्तरम्—

	षङ्क्तिः	कः	कम्
(क)	किम् अस्थाने महान् प्रजाधनापव्ययः।	चाणक्यः	राजानाम्, वृषलम्
(ख)	शान्तं पापं शान्तं पापम्।	राजा	चाणक्यम्
(ग)	नहि नहि विज्ञापयितुम्।	राजा	चाणक्यम्
(घ)	चन्दनवारिणा भूमिं सिञ्चन्तु।	राजा	प्रासादाधिकृतान् पुरुषान्
(ङ)	आर्य! इदम् अनुष्ठीयते देवस्य अनुशासनम्।	प्रासादाधिकृता पुरुषाः	राजानाम्
(च)	इत इतो देवः।	कञ्चुकी	राजानम्

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

प्रश्न 9. अधोलिखिते चाणक्यगृहस्य वर्णने एकं तथ्यम् अशुद्धम् अस्ति, तत् चिह्नीकुरुत—

(क) गृहस्य भित्तयः जीर्णाः आसन्। (...............)

(ख) एकस्मिन् कोणे गोमयस्य उपलानां भेदानार्थं प्रस्तरखण्डम् आसीत्। (...............)

(ग) छात्रैः आनीतानां दर्भणां संहतिः आसीत्। (...............)

(घ) गृहस्य छदिप्रान्तः अतिनमितः आसीत्। (...............)

(ङ) राजाधिराजमन्त्रिकृते यथोचिताः विभूतयः आसन्। (...............)

उत्तरम्— (क) शुद्धम् (ख) शुद्धम्

(ग) शुद्धम् (घ) शुद्धम्

(ङ) अशुद्धम्। राजाधिराजमन्त्रिकृते यथोचिताः विभूतयः आसन्।

प्रश्न 10. प्रश्नान् उत्तरत—

(क) कौमुदीमहोत्सवः कस्य आज्ञया आघोषितः आसीत्? ....

(ख) कः चन्द्रगुप्तस्य राज्यम् आक्रान्तुम् उद्यतः भवति? ....

(ग) मलयकेतुः किमर्थं क्रुद्धः आसीत्? ....

(घ) कस्य संस्कारः अपेक्षितः आसीत्? ....

(च) चाणक्यः कं 'वृषल' इति सम्बोधयति? ....

(झ) वैहीनरिः कस्य नाम आसीत्? ....

(ज) चाणक्यस्य मतानुसारं कस्य चिन्ता गरीयसी? ....

उत्तरम्— (क) कौमुदीमहोत्सवः **चन्द्रगुप्तस्य** आज्ञया आघोषितः आसीत्।

(ख) **मलयकेतुः** चन्द्रगुप्तस्य राज्यम् आक्रान्तुम् उद्यतः भवति।

(ग) मलयकेतुः **पितृवधात्** क्रुद्धः आसीत्?

(घ) **दुर्गस्य** संस्कारः अपेक्षितः आसीत्?

(च) चाणक्यः **चन्द्रगुप्तं** वृषल इति सम्बोधयति?

(झ) वैहीनरिः **कञ्चुकिनः** नाम आसीत्?

(ज) चाणक्यस्य मतानुसारं **राष्ट्रस्य** चिन्ता गरीयसी?

पाठ-विकासः

क. कवि परिचयः

मुद्राराक्षसं नाम नाटकं विशाखदत्तेन विरचितम्। अस्य पितुः नाम महाराजः भास्करदत्तः आसीत्।

प्रायः विद्वांसः एनं गुप्तसाम्राज्यस्य चन्द्रगुप्तद्वितीयस्य समकालिकं मन्यन्ते। अस्य कालः चतुर्थशताब्दी आसीत्। अस्य दृष्टिकोणः अतीव उदारः, सर्वधर्मान् प्रति समभावम् एव दर्शयति।

ख. मुद्राराक्षसनाटकस्य नामवैशिष्ट्यम्

मुद्रया जितः राक्षसः यस्मिन् तत् मुद्राराक्षसम्।

मुद्राराक्षसं राजनीतिम् अधिकृत्य लिखितम् अद्वितीयं नाटकम् अस्ति। अस्मिन् नाटके अस्ति वीररसस्य प्राधान्यम्; नायिकापात्रस्य अभावः; विदूषकस्य अभावः; रक्तपातं विना बुद्धिचातुर्येण जयः, अमात्यराक्षसस्य हृदयपरिवर्तनं न तु युद्धेन अपितु नीतिबलेन; देशहितचिन्तनम् एव सर्वोपरि।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

ग. नाट्यविषयकपारिभाषिकशब्दानां परिचयः

नान्दी

नाटकस्य प्रारम्भे विघ्नविनाशाय स्तुतिः।

परिभाषा-

आशीर्वचनसंयुक्ता स्तुतिर्यस्मात् प्रयुज्यते।
देवद्विजनृपादीनां तस्मान्नान्दीति संज्ञिता।। (साहित्यदर्पणात्)

सरलार्थ—

(क) कवि परिचय— मुद्राराक्षस नामक नाटक विशाखदत्त के द्वारा रचा गया। विशाखदत्त (रचयिता) के पिता का नाम महाराज भास्करदत्त था। प्रायः विद्वान इसे गुप्त सम्राट् चन्द्रगुप्त द्वितीय के समकालीन मानते हैं। इस समय ईसा की चौथी शताब्दी था। इनका दृष्टिकोण बहुत उदार, सर्वधर्मों के प्रति समान भाव को दर्शानेवाला था।

(ख) मुद्राराक्षस नाटक के नाम की विशेषता— जिस नाटक के कथानक में मुद्रा (seal) के द्वारा (मन्त्री) राक्षस को जीता गया है, उस नाटक का नाम मुद्राराक्षस रखा गया है।

मुद्राराक्षस राजनीति को लक्ष्य करके लिखा गया अद्वितीय नाटक है। इस नाटक में वीर रस की प्रधानता, नायिका पात्र का अभाव, विदूषक का अभाव, बिना रक्तपात में बुद्धि की चतुराई से विजयप्राप्ति, अमात्य राक्षस का हृदय परिवर्तन युद्ध से नहीं अपितु नीतिबल से होता है। देशहित की चिन्ता ही सबसे ऊपर रहती है।

(ग) **नाट्यविषयक पारिभाषिक शब्दों का परिचय**

नान्दी—नाटक के शुरू में विघ्नों (तापंत्रय) की शान्ति के लिए स्तुतिं।

परिभाषा—(साहित्यदर्पण से) क्योंकि इसके द्वारा देवता, ब्राह्मण या राजा आदि की स्तुति (अभिनन्दन) आशीर्वादात्मक शब्दों के माध्यम से की जाती है अतः इसे नान्दी कहते हैं।

सूत्रधारः — **सूत्रं प्रयोगानुष्ठानं धारयतीति सूत्रधारः।**
मञ्चसञ्चालनस्य सर्वम् उत्तरदायित्वम् अस्य एव भवति।

परिभाषा— **नाट्यस्य यदनुष्ठानं तत्सूत्रं स्यात् सबीजकम्।**
रंगदैवतपूजाकृत् सूत्रधार इति स्मृतः।।

सरलार्थ—सूत्रधार—जो नाटक के अभिनय के कार्य के सूत्र (व्यवस्था) को धारण करता है वह सूत्रधार होता है। रङ्गमञ्च के संचालन का सम्पूर्ण उत्तरदायित्व सूत्रधार का ही होता है।

परिभाषा—नाट्य का जो बीज सहित अनुष्ठान है, वह सब 'सूत्र' कहलाता है। रंग, देवता की पूजा करने वाला सूत्रधार कहा जाता है।

कञ्चुकिन्

परिभाषा— **अन्तः पुरचरो वृद्धो विप्रो गुणगणान्वितः।**
सर्वकार्यार्थकुशलः कञ्चुकीत्यभिधीयते।।

सरलार्थ—अन्तःपुर (रनिवास) में विचरण करने वाला, बूढ़ा, गुणसमूह से युक्त सब कार्यों के सम्पादन में कुशल ब्राह्मण कञ्चुकी कहलाता है।

स्वगतम् — **अश्राव्यं खलु यद्वस्तु तदिह स्वगतं मतम्।**

सरलार्थ—जो निश्चय ही रंगमंच पर उपस्थित पात्रों का न सुनाने योग्य कथन होता है, उसे ही नाटक में 'स्वगतम्' कहा गया है।

प्रकाशम् — **'सर्वश्राव्यम्' प्रकाशं स्यात्।**

सरलार्थ—जो रङ्गमञ्च पर उपस्थित सब पात्रों के सुनाने योग्य कथन होता है, उसे 'प्रकाशम' कहते हैं।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

विदूषकः **कुसुमवसन्ताद्यभिधैः कर्मवपुर्वेशभावाद्यैः।**
हास्यकरः कलहरतिर्विदूषकः स्यात् स्वकर्मज्ञः।।

सरलार्थ—कुसुम, वसन्त आदि नामों से, कर्म, शरीर, वेश तथा भाव आदि के द्वारा हास्य उत्पन्न करने वाला तथा कलह प्रेमी एवं अपने कार्य से परिचित व्यक्ति विदूषक होता है।

भरतवाक्यम् **नाटकाभिनयसमाप्तौ समाजिकेभ्यः नटेन आशीर्दीयते इत्यर्थः।**

सरलार्थ—नाटक के अभिनय की समाप्ति पर सामाजिकों के लिए नट की ओर से दिया गया आशीर्वचन (भारतवाक्यम्) होता है। प्रस्तुत पाठ में नान्दी तथा भरतवाक्य व सूत्रधार नहीं है।

आकाशभाषितम् **आकाशे लक्ष्यं बद्ध्वा यद् उच्यते तत् आकाशभाषितम्।**

सरलार्थ—आकाश में लक्ष्य करके जो कहा जाता है वह आकाशभाषितम् होता है।

प्रस्तुत पाठ में नाटक के आरम्भ में प्रासाद के अधिकारियों को सम्बोधन करके आकाश को लक्ष्य करके दो बार जो कहा गया है वह आकाशभाषित है।

पदानुशीलनी

परिक्रम्य (अ.)	(परि + √क्रम् + ल्यप्)	परिक्रमां कृत्वा; परिक्रमा करके; घूमकर; having gone around.
उद्वीक्ष्य (अ.)	(उत् + वि + √ईक्ष् + ल्यप्)	उपरि दृष्ट्वा; ऊपर देखकर; having seen upwards
अधिकृताः (वि.)	(संबोधन, ब. व.)	कर्मचारिणः कर्मचारीगण; officials, who are incharge of something.
वः (सर्व.)	(युष्मद्; द्वि. च. ष. ब. व.;)	युष्मान् युष्मभ्यम्, युष्माकम्; अत्र-युष्मभ्यम्; तुमको, तुम्हारे लिए तुम्हारा; यहां-तुम्हारे लिए; to you for you, your: here-for you.
अवलोकयितुम् (अ.)	(अव लोकृ तुमुन्)	द्रष्टुम; देखने के लिए; for beholding, looking at.
संस्क्रियन्ताम् (क्रि.)	(सम् कृ कर्मवाच्य, लोट् प्र. पु. ब. व.)	अलङ्क्रियन्ताम्, सजाये जाएँ be decorated.
कौमदीमहोत्सवः (सं.)	(कोमुद्याम् आयोजितः महोत्सवः) (आश्विने पौर्णमास्यान्तु चरेज्जागरणं निशि कौमुदी सा समाख्याता कार्यलोकविभूतये।।) (वाचस्पत्यः)	शरत्पूर्णिमायाम् आयोजितः उत्सवम्: शरत्पूर्णिमा की रात्रि को आयोजित उत्सव; a festival celebrated n full moon-lit night of Autumn.
प्रतिषिद्धः (वि.)	(प्रति सिध् क्त, पुं. प्र., ए. व.)	निषिद्धः; रोक दिया गया; has been prohibited.
प्राणहरेण (वि.)	(प्राणान् हरति इति उप. त.)	प्राणहारकेण; प्राण हरण करने वाले; causing death, fatal.
अनुष्ठीयते (क्रि.)	(अनु स्था कर्मवाच्य लट्, प्र. पु., ए.व.)	सम्पाद्यते; कार्य सम्पन्न किया जाता है; the order is carried out.
त्वरध्वम् (क्रि.)	(त्वर् लोट् म. पु., ब. व.,)	शीघ्रतां कुरुत; जल्दी करो; Hurry-up; make haste
दुराराध्या (वि.)	(दुःखेन आराध्या, तृ. त. पु.)	कष्टेः उपास्या; कठिनता से प्रसन्न होने वाली; difficult to please.
अपहृतः (वि.)	(अप् हृ क्त)	नाशितः, दूरीकृतः, छीन लिया गया; destroyed; removed.
प्रेक्षकाणाम् (सं.)	(प्रेक्षक, ष. ब. व.)	दर्शकानाम्; दर्शकों का; of the beholders.
जीवितुकामः (वि.)	(जीवितुं कामः यस्य सः, (बहुव्रीही.)	(मकारस्य लोपः) जीवितुम् इच्छन्: जीने की इच्छा करने वाला; desiring to live.

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

अतिवर्तेत (क्रि.)	(अति वृत् वि. लि. प्र. पु. ए. व.)	उल्लङ्घनं कुर्यात्; उल्लंघन करे; may disobey.
दुर्व्यसनात् (सं.)	(दुष्टं व्यसनं तस्मात्)	मौर्यन्दोः श्रियः अपहरणव्यापारात्; मौर्यों के चन्द्रगुप्त की राज्यलक्ष्मी को छीनने की चेष्टा से; with the efforts to snatch away the power to rule from Chandragupta.
विभूतिः (सं.)	(वि भू क्तिन्)	सम्पंत्तिः; ऐश्वर्य शान-शौकत; Prosperity; magnificence.
गोमयानाम् (सं.)	(गोमय, ष. ब. व.)	गोः पुरीषम् इति गो मयट् तेषाम; गोबर के उपलों के; of the cowdung cakes.
भेदकम् (वि.)		(भेदं करोति इति उपपदततत्पु०)) त्रोटकम्; तोड़ने वाला; for breaking.
स्तूपम् (सं.)	(पुं, ए.व.)	समूहः; राशि, ढेर; heap.
जीर्णाः (वि.)	(जृ क्त पुं, प्र. ब. व.)	पुरातनाः; जर्जरीकृताः; जीर्णशीर्ण; टूटी फूटी; ruined, decayed.
वृषलः (वि.)	(राज्ञां वृषः वृषलः; ष. त., प्र. ए. व.)	राजसु श्रेष्ठः; (चाणक्येन प्रयुक्तः चन्द्रगुप्तस्य नाम); राजाओं में श्रेष्ठ; चाण्क्य द्वारा प्रयुक्त चन्द्रगुप्त का उपनाम; Best amongest the kings. The title used by Chanakya for Chandra Gupta.
प्रोत्साह्य (अ.)	(प्र उत् सह्, णिच्, ल्यप्)	उत्तेजकवचनैः उद्दीप्य; उकसाकर; भड़का कर; having instigated.
अध्यास्ते (क्रि.)	(अधि आस् लट् प्र. पु., ए. व.)	उपविशति; बैठा है; is seated.
प्रभुभिः (वि.)	(प्रभु, तृ., ब. व.)	स्वामिभिः; स्वामियों के द्वारा; by the masters.
विज्ञापयितुम् (अ.)	(वि ज्ञा णिच्, तुमुन्)	निवेदयितुम्; सूचित करने के लिए; कहने के लिए; to state; to describe.
प्रवृत्तिः (सं.)	(प्र वृत्, क्तिन्)	प्रवृतिः; चेष्टा; efforts inclination.
अन्तरा (अ.)	(अन्तरा योगे द्वितीया)	विना; बिना; without.
अस्थाने (अ.)	(न स्थाने (नञ् तत्पुरुषः)	अनुचिते अवसरे; अनुचित स्थान पर; at an improper occasion.
निरुद्धचेष्टस्य (वि.)	(निरुद्धा चेष्टा यस्य तस्य,) (ब.व्री.)	अवरुद्धा गतिः यस्य (ब. व्री.) तस्य; रूकी हुई गति वाले की; one whose actions have been blocked.
अनभियुक्तनाम् (वि.)	(न अभियुक्तानाम्) (नञ् तत्पुरुषः)	स्वतन्त्रतायाः अवलम्बनं न कुर्वतां (राज्ञाम्); स्वयं स्वतन्त्रता का अवलम्बन न करने वाले (राजाओं का); of the king who do not handle the affairs independently.
अवधार्यताम् (क्रि.)	(अव धृ णिच्, कर्मवाच्य, लोट् प्र. पु. ए. व.)	ध्यानेन श्रूयताम्; समझिए; जानिए; listen, try understand.
राक्षसोपदेशप्रवणः (वि.)	(राक्षसस्य उपदेशे प्रवणः, (ष. स. तत्पु.))	राक्षसस्य उपदेशश्रवणे तत्पंरः, राक्षस की राजनीति को मानने के लिए तैयार; Willing to follow the advice of Rakshasa.
अभियोक्तुम् (अ.)	(अभि युज् तुमुन्)	आक्रमितुम्; आक्रमण करने के लिए; (Willing) to attack.
व्यायामकालः (सं.)	(व्यायामस्य कालः (ष. तत्पु.)	विशिष्ट-आयासस्य अवसरः; विशेष प्रयत्नों का समय; time for making special efforts.
दुर्गसंस्कारः (सं.)	(दुर्गस्य संस्कारः, (ष. तत्पु०))	सेनासङ्ग्रह-दुर्गपरिष्करण-संस्कारादि-रूपस्य अवसरः; सेनासङ्ग्रह आदि द्वारा किले की नाकाबन्दी आदि का अवसर; reinforcing the military arrangements.

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in